International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ग्रामीण विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर आत्म-सम्प्रत्यय के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन (होषंगाबाद जिले के संदर्भ में)

शोध निर्देशिका
डॉ.वीणा झा
प्राचार्य चौहान कॉलेज ऑफ एजूकेशन
भोपाल म०प्र०

शोधकर्ता
श्रीमति भारती शर्मा
प्राध्यापक ,सी०व्ही०रमन कालेज
आफ एजूकेशन होशंगाबाद

१.प्रस्तावना –

षिक्षा का मूलभूत उद्देष्य व्यक्ति में ऐसे परिवर्तन लाना होता है, जो समाज के विकास, व्यक्ति के जीवन निर्माण, रचनात्मक कार्य करने, दूसरों की सहायता करने और राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु आवष्यक होते है। षिक्षा, हमारे चिन्तन को विवेक सम्मत् बनाती है, जिससे हमें समाज को, कुरीति और अन्याय से मुक्त कराने की प्रेरणा मिलती है। मनुष्य जन्म से अज्ञानी एवं संस्कारहीन होता है। षिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास हो पाना सम्भव है। षिक्षा ही आम व्यक्ति को समाज में अलग एक विषिष्ट स्थान दिलानें में सार्मथ्य रखती है तथा मानव व्यवहार परिष्कृत करती है। षिक्षा का मूलभूत उद्देष्य व्यक्ति में ऐसे परिवर्तन लाना होता है, जो समाज के विकास, व्यक्तित्व के जीवन निर्माण रचनात्मक कार्य करने, दूसरों की सहायता करने और राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु आवष्यक होते है। षिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है। किसी भी देष की सामाजिक प्रगति वहां की षिक्षा प्रणाली पर निर्भर करती है। षिक्षा प्रणाली जितनी सुदृढ़ होगी, देष एवं समाज उतना ही सुदृढ़ होगा। षिक्षा का उद्देष्य व्यक्ति को परिपक्त बनाना है। षिक्षा केवल वह नहीं जो छात्रों को स्कूल एवं विद्यालय में दी जाती है, अपितु षिक्षा व्यापक अर्थो में जीवन पर्यन्त चलने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जो विभिन्न वर्ग और श्रेणी के लोगों के आपसी विचार-विमर्ष के द्वारा चलती रहती है। इससे लोगों के व्यक्तितत्व में परानुभूति, गतिषीलता, प्रबुद्धता, वैज्ञानिकता, उच्च सहभागिता तथा व्यवसाय की आधुनिक विषेषतायें उत्पन्न की जा सकेगी तथा पिछड़ेपन संकुचितता तथा अज्ञानता को नष्ट किया जा सकेगा। षिक्षा हमारे चिन्तन को विवेक सम्मत बनाती है, जिससे हमारे समाज को कुरीति और अन्याय से मुक्त कराने की प्रेरणा मिलती है। षिक्षा समाज में प्रचलित दार्षनिक विचार धाराओं का व्यावहारिक पक्ष है। इसके बिना प्रगति कभी भी पूर्ण और बहु-आयामी नहीं हो सकती । समाज के दार्षनिक चिन्तन में जब परिवर्तन होता है, तब उन परिवर्तनों का स्पष्ट प्रभाव षिक्षा पर पड़ता है। एक षिक्षित व्यक्ति समाज या राष्ट्र की प्रगति के दुर्गम पथ पर अनवरत यात्रा कर पाने में समर्थ होता है। सामाजिक परिवर्तन भी षैक्षिक परिवर्तनों के कारक बनते है, समाज का दर्षन, षिक्षा के कार्यो का मूल्यांकन तथा सामाजिक परिवर्तन, ये तीन ऐसे घटक है, जो षैक्षिक चिन्तन को प्रभावित करते है।

एक स्वस्थ्य बालक के संपूर्ण विकास में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रत्येक परिवार की अपनी कुछ विषेषताएँ, शक्तियाँ, विष्वास, नैतिकता, संस्कार, मान्यताएँ एवं कमजोरियाँ होती है। ये परिवार माता-पिता, भाई-बहन, रिष्तेदार आदि से मिलकर बनते है। परिवार में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका माता-पिता अर्थात् अभिभावक की होती है। प्रत्येक अभिभावक की यह कोषिष रहती है कि वे अपने बच्चों को श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम षिक्षा दें।

२.नैतिक मूल्य (डवतंस टंसनम)

हमारा देश अत्याधिक प्राचीन संस्कृति वाला देश है, जिसमें हमेशा ही मनुष्य के जीवन में नैतिकता व चरित्र को प्रधानता दी गयी है, और सादा जीवन उच्च विचार भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र रहे

(२)

हैं, किन्तु भौतिक जीवन को भी पर्याप्त महत्व दिया गया और गुरूकुलों में नैतिक, अध्यात्मिक शिक्षा के साथ ही भौतिक जीवन से जुड़े क्रियाकलापों व व्यवहारिक ज्ञान की शिक्षा भी प्रदान की जाती थी। षिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में सद्गुणों का विकास करके मानव समाज अपने मूल्यों को सुरक्षित रख सकता है और आगे बढ सकता है। तभी तो विद्वान कहते हैं कि मनुष्य अच्छे गुणों का जितना अधिक संगठन करता है उतना ही अधिक वह अपने चरित्र की अभिव्यक्ति करता है। आज के विद्यार्थी ही राष्ट्र एवं समाज के भावी कर्णधार व देश का भविष्य है, अतः यदि हमारे विद्यार्थी अपने जीवन में उच्च नैतिक व मानवीय मूल्यों को आत्मसात् करेंगें तो भविष्य में आदर्श व नैतिक मानवीय समाज की कल्पना साकार हो सकेगीं।

नैतिक मूल्यों के विकास में परिवार का योगदानः- परिवार संबंधों की एक व्यवस्था हैं। माता पिता व उनकी संतानों के बीच पाई जाती हैं। यह बालक के जीवन में प्रथम सामाजिक अभिकरण हैं। यह अनेक लोगों का एक संगठन है। जिसके सदस्य एक अनोखे संवेग आत्मक बंधन के जटिल जाल व्दारा बंधे होते है व एक सामाजिक ईकाई का निर्माण करते हैं। रेमाण्ट ने ठीक ही कहा है कि '' परिवार वह स्थान हैं जहॉ महान गुण उत्पन्न होते है, प्रेम का विकास होता है, न्याय और अन्याय, सत्य और असत्य परिश्रम और आलस्य में अन्तर करके बालक अच्छी आदतें ग्रहण करता हैं।''

नैतिकता का संबंध मानवीय अभिवृति से है, इसलिये षिक्षा से इसका महत्पूर्ण अभिन्न व अटूट संबंध है, कौषलों व दक्षताओं की अपेक्षा अभिवृति-मूलक पृवर्तियों के विकास में पर्यावरणीय घटकों का विषेष योगदान होता है। यदि बच्चों के परिवेष में जिन तत्वों की प्राधनता होगी वे जीवन का अंष बन जायेगें। इसलिये कहा जाता हैं कि नैतिक मूल्य पढ़ाये नहीं जाते अधिगृहित किये जाते हैं। वास्तव में नैतिक गुणों की कोई एक पूर्ण सूची तैयार नही की जा सकती, तथापि संक्षेप में हम इतना कह सकते है कि हम उन गुणों को नैतिक कह सकते है जो व्यक्ति के स्वयं के, संर्वागीण विकास व कल्याण में किसी प्रकार की बाधा न पहुँचायें, विषेष ध्यान देने वाली बात यह है कि नैतिक मूल्यों की जननी नैतिकता सदगुणों का समन्वय मात्र नही है, अपितु यह एक व्यापक गुण है जिसका प्रभाव मनुष्य के समस्त क्रिया कलापों पर होता है और सम्पूर्ण व्यक्तित्व इससे प्रभावित होता है। हमें इस बात को भली-भांति समझना होगा कि नैतिक मूल्य नितांत व्यक्तिक होते हैं अपने प्रस्फुटन, उन्नयन व क्रियान्वयन से यह क्रमषः सामाजिक व सार्वभौमिक होते जाते है।

आधुनिक जीवन में नैतिक मूल्यों की आवष्यकता, महत्व अनिवार्यतः व अपरिहार्यता को इस बात से सरलता व संक्षिप्ता में समझा जा सकता है। संसार के दार्षनिकों, समाजषास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों, षिक्षा शास्त्रियों, नीति शास्त्रियों ने नैतिकता को मानव के लिये आवष्यक गुण माना है।

३.आत्म सम्प्रत्यय (ैमस िबवदेमचज)

व्यक्तित्व की पहचान उसके गुणों तथा उसके सामान्य व्यवहार से होती है। इन्ही से सम्बन्धित उसमें एक विचारधारा का निर्माण होता है जो उसके व्यवहार की धुरी बन जाते है। व्यवहार की इस धुरी पर व्यक्तित्व के गुण उसी प्रकार घुमते है। माता-पिता के प्रोत्साहन का प्रभाव बालकों के स्व विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किसी भी व्यक्ति के आंतरिक पक्ष को अभिव्यक्त करने वाला षब्द ही स्व का प्रतीक है। आत्म तथा स्व व्यक्तित्व का एक संगठित अभिकरण है। व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में उसका आत्म एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। आत्म सम्प्रत्यय बालक को एकता एवं स्थायित्व प्रदान करता है। यह जीवन की उपलब्धियों, क्रियाओं तथा कृत्यों की निष्चयत्मकता इस बात पर निर्भर करती है कि व्यक्ति अपने विषय में क्या अनुभव करता है। आत्मसंप्रत्यय बास्तव में व्यक्तिगत प्रभाव है और उसका प्रत्यक्षीकरण अधिकतर व्यक्ति के व्यवहार तथा आचरण द्वारा ही होता है। व्यक्ति का स्वंय अपने लिये संप्रत्यय ही आत्म-बोध है, वास्तव में किसी परिस्थिति में आत्मबोध व्यक्ति का पूर्वानुमान है। यह उस पर

(३)

निर्भर करता है कि वह उस परिस्थिति को स्वीकार करे अथवा अस्वीकार। स्वीकृत मापदण्ड के अनुसार आत्म बोध एक नये अनुभवों को संगठित करता है अर्थात प्रेरकों के माध्यम से बच्चों में हम की भावना तथा औचित्य का विकास किया जा

सकता है। आत्म प्रत्यय व्यक्ति के व्यवहार एवं चिन्तन आदि को प्रभावित करता है इसलिये आत्म-प्रत्यय का अर्थ एक व्यक्ति अपने सम्बन्ध में क्या अनुभव करता है या मत रखता है, से है। बालक के प्रथम वर्ष के अन्त तक षारीरिक प्रतिभाओं का विकास पहले होता है, इसके बाद मनोवैज्ञानिक प्रतिभायें विकसित होती है, जिनमें भावनायें विचार, संवेग, साहस, ईमानदारी, आत्म-विष्वास आदि योग्यतायें सम्मिलित होती है, बालक की आयु जैसे-जैसे बढ़ती जाती है वैसे-वैसे षारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रतिभायें एक दूसरे में समाहित हो जाती है। रैंक और फ्रैंक के अनुसार बालक अपने चारों ओर के वातावरण में जैसा अपने आप को देखता है और उसके परिवार के लोग और परिचित उसे देखते है, इसी आधार पर वह अपने आत्म-संप्रत्यय का निर्माण करता है, इसलिये आत्म-सम्प्रत्यय को दर्पण प्रतिमा कहा गया है। हरलॉक के अनुसार कभी-कभी जब परिवार के लोग बालक को षैतान समझते है और उसके साथी भी यही मत बना लेते हैं तो बालक अपना आत्म-संप्रत्यय भी इसी प्रकार बना लेता है तथा वह अपने आप को षैतान बालक के रूप में देखने लगता है।

४.आत्म सम्प्रत्यय का परिभाषिकरण -

आत्म सम्प्रत्यय की प्रक्रिया जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, जो कि समाज द्वारा लगातार विकसित होता रहता है। एक व्यक्ति जिस प्रकार से अपना प्रत्यक्षीकरण करता है अथवा जिस ढंग से अपने को देखता है, उसे ही हम उस व्यक्ति का आत्म-सम्प्रत्यय कहते हैं। इस प्रकार आत्म-संम्प्रत्यय वह है जेसा कि व्यक्ति वास्तव में अपने संबंध में विचार रखता है। आत्म षब्द किसी भी व्यक्ति के आन्तरिक पक्ष को अभिव्यक्त करने वाला षब्द का प्रतीक है। यह व्यक्तित्व का एक संगठित अभिकरण है। जर्सील्ड के अनुसार स्व विचारों एवं भावों का वह संगठन, जो व्यक्ति के व्यक्तिनिष्ठता के प्रति उसकी चेतन्यता जैसा कि वह कौन है या वह क्या है, का निर्माण करती है। किसी भी व्यक्ति के व्यवहार को समझने के लिये आत्म-सम्प्रत्यय महत्वपूर्ण कुंजी है। मानव व्यवहार की निष्चयात्मकता और व्यक्तित्व के मापन की स्वीकृति हेतु आत्म-संप्रत्यय एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। वर्तमान समय में मनोवैज्ञानिकों के और षिक्षा षास्त्रियों में इस बात की सहमति है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व में उसका स्व- प्रत्यय एक महत्वपूर्ण है। मनुष्य के व्यवहार को निष्चित करने, उसको समायोजन, षैक्षणिक उपलब्धि और सामान्य व्यवहार में व्यक्ति के आत्म-सम्प्रत्यय का महत्वपूर्ण योगदान है।

आत्म-सम्प्रत्यय वह सामान्य पद है जिसका अर्थ है - व्यक्ति के गुणों और व्यवहार के सम्बन्ध में उसका मत। एक व्यक्ति अपने गुणों और व्यवहार आदि के संबंध में जो मत रखता है वही उसका आत्म-संप्रत्यय है। प्रत्येक व्यक्ति का आत्मसंप्रत्यय उसके विचारों पर आधारित होता है तथा उस व्यक्ति के लिये यह आत्मसंप्रत्यय बहुत महत्वपूर्ण होता है। आत्मसंप्रत्यय व्यक्ति का केन्द्र बिन्दु है।

होषंगाबाद जिले के ग्रामीण विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर आत्म सम्प्रत्यय के प्रभावों पर तुलनात्मक अध्ययन- सांख्यिकीय विष्लेषण

क्र०	चर	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमानों का अन्तर	टी-का मान
१	नैतिक मूल्य	ग्रामीण	६००	१४.२	३.२१	०.४६	४.५६
२	आत्म सम्प्रत्यय			१६.३	३.५७		

०.०५ स्तर का असार्थक(१.९६)

(४)

५.शैक्षिक निहतार्थः-

किसी भी प्रषांसगिक शोधकार्य की महत्वता उसके शैक्षिक निहतार्थो से प्रमाणित होती है कोई भी शोधकर्ता अपने शोध अध्ययन की आवष्यकताओं उपलब्धताओं एवं महसूस की गई कमियों का विवेचन जितनी अधिक सूक्ष्मता से करने में सही होता है वह इसका शैक्षिक निहतार्थ कहलाता हैं।

६.निष्कर्षः-

प्रस्तुत अध्ययन के विष्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष यह व्यक्त करते हैं कि निर्धारित शोध परिकल्पना के स्वीकृत एवं अस्वीकृत होने के संभावित कारण क्या हैं। इन कारणों के प्रभाव को कम या अधिक करके शोध की गुणवत्ता एवं प्रभावषीलता को किस मात्रा तक घटाया या बढ़ाया जा सकता हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम हाई स्कूल स्तर की षिक्षा की मनो सामाजिक समस्याओं के कारणों एवं उसके निदान हेतु अत्यन्त उपयोगी एवं महत्वपूर्ण हैं। शोध अध्ययन के व्दारा हाई स्कूल स्तर के विद्यार्थियों, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक समस्याओं का निदान तथा उनमें षिक्षा के प्रति समुचित दृष्टीकोण का विकास होगा तथा अभिभावकों में षिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न होगी। इस प्रकार प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणाम अत्यन्त महत्वपूर्ण व उपयोगी हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

वेस्ट, जॉन, डब्ल्यू० - रिसर्च इन एजूकेशन, न्यू देहलीः प्रिंटिंग हाल ऑफ इण्डिया प्रा०लि०, १९७७

- **भटनागर, सुरेश** - शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ, मेरठ पब्लिसिंग हाउस, १९९१
- **भट्टाचार्य, एस०** - फाउन्डेशन ऑफ एजूकेशन एण्ड एजूकेशनल रिसर्च, बड़ौदा, १९६८
- **बसु दुर्गा दास**-भारत का संविधान-एक परिचय,नई दिल्लीःप्रेन्टिस हाल ऑफ इण्डिया प्रा०लि०, १९९८
- **भारत सरकार नई दिल्ली** - शिक्षा की चुनौती नीति सम्बन्धी परिप्रेक्ष्य, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, १९८५
- **भारत सरकार नई दिल्ली** - प्रोग्राम ऑफ एक्सन नेशनल पॉलिसी आन एजूकेशन, नई दिल्लीः मानव संसाधन विकास मंत्रालय, १९८६
- **चौहान, एस०एस०** - एडवांस एजूकेशनल साइकोलॉजी, नई दिल्ली, विकास पब्लिसिंग हाउस
- **चौधरी, आर०वी०**- पी०एच०डी०, शिक्षाशास्त्र, गुजरात विश्वविद्यालय, गुजरात।
- **दिनेष सिंह**- एम०एड्० लघु शोध प्रबंध, इलाहाबाद विष्वविद्यालय, इलाहाबाद।
- **दीपिका रानी**-एम०एड्०लघु षोध प्रबंध, राजा हरपाल सिंह, पी०जी० कालेज, सिंगरामऊ, जौनपुर।
- **फाक्स,जे० डेविड**-दि रिसर्च प्रासेस इन एजूकेशन,न्यूयार्क हाल्ट रिंक हर्ट एण्ड विन्स्टन,इकं, १९६९
- **गिलफोर्ड, जे०पी०** -फण्डामेंटल ऑफ स्टेटिस्टिक्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजूकेशन न्यूयार्क, मैक ग्रा हिल बुक कम्पनी, १९६५
- **गुडे, डब्ल्यू० जे० एण्ड हैट, पी०के०** - मेथड्स ऑफ रिसर्च, न्यूयार्कः मिकग्राहिल, १९६२